Research Review
The Refereed Peer Reviewed
International Journal
ISSN: 2321-4708
Vol. 10, Issue: 126, August, 2023
Paper ID: RRJ852339
https://www.researchreviewonline.com
Publishing URL: https://www.researchreviewonline.com/issues/volume-10-issue-126-august-2023/RRJ852339

भारतीय सामाजिक समस्या

प्रोफेसर संगीता बिपिनभाई परमार

प्रोफेसर, महात्मा गांधी श्रम संस्थान, अहमदाबाद

एक सामाजिक समस्या "मानवीय संबंधों में एक समस्या है जो स्वयं समाज को गंभीर रूप से खतरे में डालती है या कई लोगों की महत्वपूर्ण आकांक्षाओं में बाधा डालती है।" पहले पहलू के संबंध में वे कहते हैं, "एक सामाजिक समस्या तब मौजूद होती है जब संगठित समाज की लोगों के बीच संबंधों को व्यवस्थित करने की क्षमता विफल होने लगती है; जब इसकी संस्थाएं लड़खड़ा रही हैं, इसके कानूनों का उल्लंघन हो रहा है, इसके मूल्यों का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक संचरण टूट रहा है, उम्मीदों का ढांचा हिल रहा है। इस प्रकार परिभाषित की जाने वाली एक सामाजिक समस्या, किशोर अपराध को "स्वयं समाज में एक विघटन के रूप में" देखा जाना चाहिए।

भारत, अपनी विविध आबादी और जटिल सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य के साथ, कई प्रकार के सामाजिक मुद्दों का सामना करता है। इन मुद्दों के दायरे और प्रभाव में भिन्नता है, लेकिन भारत में कुछ सबसे प्रमुख सामाजिक मुद्दों में शामिल हैं:

1. गरीबी:

महत्वपूर्ण आर्थिक विकास के बावजूद, भारत की आबादी का एक बड़ा प्रतिशत अभी भी गरीबी रेखा से नीचे रहता है। इसके परिणामस्वरूप भोजन, स्वच्छ पानी और स्वास्थ्य देखभाल जैसी बुनियादी आवश्यकताओं तक अपर्याप्त पहुंच होती है।

गरीबी एक सामाजिक समस्या के रूप में

गरीबी एक जटिल और व्यापक सामाजिक समस्या है जो व्यक्तियों, परिवारों और पूरे समुदायों को प्रभावित करती है। यह सभ्य जीवन स्तर के लिए आवश्यक संसाधनों और अवसरों की कमी की विशेषता है। एक सामाजिक समस्या के रूप में गरीबी के कुछ प्रमुख पहलू इस प्रकार हैं:

आर्थिक असमानता:

गरीबी अक्सर किसी समाज के भीतर महत्वपूर्ण आय और धन असमानता के कारण उत्पन्न होती है। जनसंख्या का एक छोटा सा प्रतिशत धन का असंगत रूप से बड़ा हिस्सा रखता है, जबकि जनसंख्या का एक महत्वपूर्ण हिस्सा अपनी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए संघर्ष करता है।

बुनियादी आवश्यकताओं तक पहुंच:

गरीबी का मतलब है कि व्यक्तियों और परिवारों को भोजन, स्वच्छ पानी, आवास, स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा और स्वच्छता सहित आवश्यक वस्तुओं और सेवाओं तक पहुंच की कमी हो सकती है। इससे कुपोषण, अपर्याप्त रहने की स्थिति और स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं।

Research Review
The Refereed Peer Reviewed
International Journal
ISSN: 2321-4708
Vol. 10, Issue: 126, August, 2023
Paper ID: RRJ852339
https://www.researchreviewonline.com
Publishing URL: https://www.researchreviewonline.com/issues/volume-10-issue-126-august-2023/RRJ852339

सीमित अवसर:

गरीबी लोगों की शैक्षिक और आर्थिक अवसरों तक पहुंच को प्रतिबंधित करती है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक सीमित पहुंच पीढ़ीगत गरीबी को कायम रख सकती है, क्योंकि यह अच्छे वेतन वाली नौकरियों को सुरक्षित करने और गरीबी के चक्र से बचने की क्षमता में बाधा डालती है।

स्वास्थ्य असमानताएँ:

गरीबी अक्सर खराब स्वास्थ्य परिणामों से जुड़ी होती है। गरीबी में रहने वालों को उचित स्वास्थ्य देखभाल तक पहुंच नहीं मिल पाती है, जिससे पुरानी बीमारियों का प्रसार बढ़ जाता है और जीवन प्रत्याशा कम हो जाती है।

सामाजिक बहिष्कार:

गरीबी सामाजिक बहिष्कार और सामुदायिक जीवन में भागीदारी की कमी का कारण बन सकती है। इससे गरीबी में रहने वाले लोगों में निराशा और हाशिये पर रहने की भावना पैदा हो सकती है।

बाल गरीबी:

बाल गरीबी गरीबी का एक विशेष रूप से चिंताजनक पहलू है। गरीबी में बड़े होने से बच्चे के शारीरिक, भावनात्मक और संज्ञानात्मक विकास पर लंबे समय तक प्रभाव पड़ सकता है, जिससे संभावित रूप से अगली पीढ़ी में गरीबी का चक्र कायम हो सकता है।

शहरी और ग्रामीण असमानताएँ:

भारत सहित कई देशों में, शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच गरीबी दर में महत्वपूर्ण असमानताएँ हैं। ग्रामीण गरीबी अक्सर कृषि और भूमि संबंधी मुद्दों से प्रभावित होती है, जबकि शहरी गरीबी बेरोजगारी और आवास चुनौतियों से प्रभावित होती है।

अंतर्विभाजित कारक:

गरीबी अक्सर लिंग, जाति, नस्ल या जातीयता के आधार पर भेदभाव जैसे अन्य कारकों से बढ़ती है। ये परस्पर विरोधी कारक अवसरों और संसाधनों तक पहुंच को और सीमित कर सकते हैं।

बेघर होना:

अत्यधिक गरीबी के कारण बेघर होना पड़ सकता है, जिसमें व्यक्तियों और परिवारों के पास स्थिर, सुरक्षित आवास का अभाव होता है। बेघर होना हिंसा और स्वास्थ्य जोखिमों सहित कई अतिरिक्त चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है।

सामाजिक लागत:

गरीबी समग्र रूप से समाज पर बोझ डालती है। इससे स्वास्थ्य देखभाल लागत में वृद्धि, उच्च अपराध दर और आर्थिक उत्पादकता में कमी आती है। इसलिए, गरीबी को दूर करने से समग्र रूप से समाज को लाभ हो सकता है।

Research Review
The Refereed Peer Reviewed
International Journal
ISSN: 2321-4708
Vol. 10, Issue: 126, August, 2023
Paper ID: RRJ852339
https://www.researchreviewonline.com
Publishing URL: https://www.researchreviewonline.com/issues/volume-10-issue-126-august-2023/RRJ852339

गरीबी को एक सामाजिक समस्या के रूप में संबोधित करने के लिए एक बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है जिसमें नीतिगत पहल, आर्थिक विकास, शिक्षा और नौकरी प्रशिक्षण, स्वास्थ्य देखभाल पहुंच और सामाजिक सुरक्षा जाल शामिल हैं। गरीबी के चक्र को तोड़ने, प्रारंभिक बचपन के विकास में निवेश करने और आर्थिक असमानता को कायम रखने वाले प्रणालीगत मुद्दों को संबोधित करने पर ध्यान केंद्रित करने से गरीबी उन्मूलन प्रयासों को भी लाभ होता है। इसके अतिरिक्त, जागरूकता बढ़ाने और सहानुभूति पैदा करने से गरीबी से जुड़ी रूढ़िवादिता और कलंक से निपटने और अधिक दयालु समाज को बढ़ावा देने में मदद मिल सकती है।

2. लैंगिक असमानता:

भारत में लैंगिक भेदभाव एक व्यापक मुद्दा है। महिलाओं को अक्सर शिक्षा, रोजगार और स्वास्थ्य देखभाल में असमानताओं का सामना करना पड़ता है। घरेलू हिंसा और यौन उत्पीड़न जैसी लिंग आधारित हिंसा एक महत्वपूर्ण चिंता बनी हुई है।

सामाजिक समस्या के रूप में लैंगिक असमानता

लैंगिक असमानता एक महत्वपूर्ण और व्यापक सामाजिक समस्या है जो भारत सहित कई समाजों में मौजूद है। इसमें असमान व्यवहार और अवसर शामिल हैं जिनका व्यक्तियों को उनके लिंग के आधार पर सामना करना पड़ता है, विशेष रूप से महिलाओं और लड़कियों को भेदभाव का खामियाजा भुगतना पड़ता है। सामाजिक समस्या के रूप में लैंगिक असमानता के कुछ प्रमुख पहलू यहां दिए गए हैं:

आर्थिक असमानताएँ: महिलाएँ अक्सर समान काम के लिए पुरुषों की तुलना में कम कमाती हैं या कम वेतन वाली नौकरियों में केंद्रित रहती हैं। यह वेतन अंतर महिलाओं के लिए आर्थिक असमानता और वित्तीय असुरक्षा में योगदान देता है।

सीमित शैक्षिक अवसर:

कुछ क्षेत्रों में, लड़कियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँचने में बाधाओं का सामना करना पड़ता है। सांस्कृतिक मानदंड और आर्थिक कारक उनके शैक्षिक अवसरों को सीमित कर सकते हैं, जिससे महिलाओं में साक्षरता दर कम हो सकती है।

लिंग आधारित हिंसा:

लैंगिक असमानता का लिंग आधारित हिंसा से गहरा संबंध है, जिसमें घरेलू हिंसा, यौन उत्पीड़न और मानव तस्करी शामिल है। हिंसा के इन रूपों का महिलाओं और लड़कियों पर विनाशकारी शारीरिक और मनोवैज्ञानिक परिणाम होता है।

निर्णय लेने की शक्ति का अभाव:

राजनीति, व्यवसाय और सामुदायिक संगठनों सहित नेतृत्व की भूमिकाओं में महिलाओं को अक्सर कम प्रतिनिधित्व दिया जाता है। प्रतिनिधित्व की यह कमी उनके जीवन को प्रभावित करने वाली नीतियों और निर्णयों को प्रभावित करने की उनकी क्षमता को सीमित कर देती है।

असमान घरेलू और देखभाल की जिम्मेदारियाँ:

Research Review
The Refereed Peer Reviewed
International Journal
ISSN: 2321-4708
Vol. 10, Issue: 126, August, 2023
Paper ID: RRJ852339
https://www.researchreviewonline.com
Publishing URL: https://www.researchreviewonline.com/issues/volume-10-issue-126-august-2023/RRJ852339

पारंपरिक लिंग भूमिकाएँ अक्सर यह तय करती हैं कि महिलाओं को घरेलू और देखभाल की ज़िम्मेदारियों का अनुपातहीन बोझ उठाना पड़ता है। इससे कार्यबल में उनकी भागीदारी सीमित हो सकती है और उनके करियर में उन्नति में बाधा आ सकती है।

स्वास्थ्य संबंधी असमानताएं:

स्वास्थ्य देखभाल और पोषण तक पहुंच में लैंगिक असमानताओं के परिणामस्वरूप महिलाओं के स्वास्थ्य पर खराब परिणाम हो सकते हैं। इसमें परिवार नियोजन, मातृ स्वास्थ्य देखभाल और निवारक सेवाओं तक सीमित पहुंच शामिल हो सकती है।

बाल विवाह:

कुछ क्षेत्रों में, बाल विवाह अभी भी प्रचलित है, जो युवा लड़कियों से उनका बचपन, शिक्षा और स्वास्थ्य छीन लेता है। कम उम्र में शादी से गरीबी और भेदभाव का चक्र शुरू हो सकता है।

कानूनी प्रणालियों में भेदभाव:

कुछ देशों में, भेदभावपूर्ण कानून और प्रथाएं महिलाओं को विरासत, संपत्ति के अधिकार और तलाक जैसे मामलों में नुकसान पहुंचा सकती हैं।

यौन वस्तुकरण:

महिलाओं और लड़कियों को अक्सर मीडिया, विज्ञापन और रोजमर्रा की जिंदगी में वस्तुकरण का शिकार होना पड़ता है, जो हानिकारक लिंग रूढ़िवादिता को मजबूत करता है और महिलाओं के अवमूल्यन में योगदान देता है।

मानदंड और रूढ़िवादिता:

सामाजिक मानदंड और रूढ़िवादिता लैंगिक असमानता को कायम रख सकते हैं। इनमें पुरुषत्व और स्त्रीत्व से जुड़ी अपेक्षाएं शामिल हो सकती हैं जो व्यक्तिगत अभिव्यक्ति और विकल्पों को सीमित करती हैं।

Reference:

Alchain, Armen (1950) “Uncertainty, Evolution and Economic Theory” The Journal of Political Economy, Vol. 58(3), pp. 211-221.

Boserup, Ester (1970) “Women’s Role in Economic Development”, Earthscan, London.

Visaria, Pravin (1971) “The Sex Ratio of the Population of India”, Monograph 10, Census of India, Office of the Registrar General, India, New Delhi.

B. S. Gupta, T. P. Jain (1973) “A comparative study of the health status of rural and urban primary school children” The Indian Journal of Pediatrics, April 1973, Volume 40, Issue 4, pp 135–141.

Bardhan, Pranab K. (1974) “On Life and Death Questions”, Economic and Political Weekly 9, Nos. 32-34, pp. 1293-1974.

Research Review
The Refereed Peer Reviewed
International Journal
ISSN: 2321-4708

Vol. 10, Issue: 126, August, 2023
Paper ID: RRJ852339
https://www.researchreviewonline.com

Publishing URL: https://www.researchreviewonline.com/issues/volume-10-issue-126-august-2023/RRJ852339

Berreman. G.D. (1975) "Himalyan Polyandry and the Domestic Cycle", Oxford University Press, Delhi.